vkRe ifjp;

1 e: tx thou---------------------------djrk g;A

vFk&कवि कहते है कि मुझमें सांस्कारिक चिंताओं का भार बहुत है फिर भी मेरा हृदय प्यार से भरा हुआ है। मुझे किसी प्रिय के प्रेम ने तंरगित किया हुआ है। मेरा मन किसी प्रिय के प्रेम के कारण तंरगित हो उठा है। अब मैं उसी की झनकार में खोया –खोया सा जी रहा हूँ।

कवि कहते है कि मैने प्रेम रूपी मदिरा का पान किया है। मैंने प्रेम के भावों में डूबकर कभी भी सांसारिक झंझटो की परवाह नहीं की है।यह संसार उन्हीं लोगों की स्तुति करता है,लेकिन मैं उस पर ध्यान नहीं देता बस मैं अपने मन के गीतों को गाता फिरता हूँ।

dyk LkkSan;Z – 1.कवि ने निज प्रेम को स्वीकारा है। 2.स्नेह सुरा और साँसों के तार में रूपक अलंकार है।.3. जग–जीवन,स्नेह सुरा में अनुप्रास अलंकार है। 4. खड़ी बोली को प्रयोग 5. श्रंगार रस का प्रयोग।

2 e: fut mj d: ---------------------------djrk g;A

vFk–कवि कहते है कि वे अपनी मनो भावनाओं को दुनिया के सामने कहने की कोशिश करता हूँ। मै संसार को अपने हृदय के कोमल भाव प्रदान करना चाहता हूँ। यह बाहरी संसार मुझे अधूरा सा लगता है क्योंकि इसमें प्रेम का आभाव है इसलिए ये प्रेमहीन संसार मुझे भाता नहीं है। इस दिवानेपन के कारण मुझे अनेक दुख मिले है। परन्तु मैं अपने प्रिय की याद में दुखों को उठाया घूम रहा हूँ।

कवि कहते है कि मैं अपने हृदय में आग जलाकर उसमें स्वयं जलता हूँ। प्रेम की दीवानगी में मस्त होकर जीवन में आये सुख–दुख के बीच मस्त रहता हूँ। यह संसार आपदाओं को संसार है। लोग इसे पार करने के लिए कर्म की नाव बनाते है परन्तु मै प्रेम रूपी नाव के सहारे इन विपदाओं को पार कर लेता हूँ और अपने प्रेम की मस्ती और उमंग में जिया करता हूँ।

dyk LkkSan;& 1.खड़ी बोली का प्रयोग।2. सपनों के संसार में अनुप्रास अलंकार। 3.भवसागर में रूपक अलंकार।4. कवि ने प्रेम की मस्ती को प्रमुखता दी है।

3 e: ;kSou dk --Kku Hkqykuk A

vFk&कवि अपना परिचय लोगों के सामने देता हुआ कहता है कि वह युवावस्था में उत्पन्न अत्याधिक प्रेम की सनक अपने हृदय में लिए घूमता रहता है। इस दुख के कारण उत्पन्न अपने मन में उदासी और शिथिलता के भाव लिए रहता है। यह उदासी और शिथिलता उसे बाहर से तो हँसाती रहती है किन्तु अंतर्मन से रूलाती रहती है। कवि अपनी इस बात की पुष्टि करता हुआ कहता है कि वह अपने मन में किसी को स्मृति संजोए रहता है और वहीं उसके साथ रहती है।

कवि कहते है कि इस संसार में लोगों ने उसके जीवन के सत्य को जानने की बहुत कोशिश की परन्तु कोई सच नहीं जान पाया। हर व्यक्ति नादानी करते दिखता है।यह मूर्ख भी वही है जो जान बूझकर सांसारिक लाभ और लोभ के चक्कर में उलझते जा रहा है। क्योंकि हर व्यक्ति वैभव,समृद्धि,भोग साम्रगी की तरफ भागता हैं। कवि कहते है कि मैं इस नादानी को समझ गया हूँ इसलिए मैं सांसारिक धन की बातों को भूलकर अपने मन के कहे अनुसार चलना सीख रहा हूँ।

dyk LkkSan;& कवि ने सांसारिक मोह–माया के विषय में बतलाया है। 2. खड़ी बोली का उपयोग। 3. कर यतन मिटे सब सत्य किसी ने जाना पंक्ति में अनुप्रास अलंकार।

4- e vkj ---fy, fQjrk gA

vFk& कवि कहते है कि मुझमें और संसार में दोनों में कोई संबंध नहीं है। संसार से मेरा टकराव चल रहा है। कवि अपनी कल्पना के अनुसार संसार का निर्माण करता है और फिर उसे मिटा देता है। यह संसार इस धरती पर सुख दुख के साधन एकत्रित करता है परन्तु मैं उसे पूरी तरह ठुकरा देता हूँ। मुझे सुख,वैभव और धन समृद्धि की कोई चाह नहीं है।

कवि कहते है कि मेरे रूदन में भी प्रेम झलकता है। मैं अपने गीतों में प्रेम के आंसू रोता हूँ। मेरी शीतलवाणी में भी आग समायी हुई है अर्थात् उसमें असंतोष झलकता है जिस प्रेम पर बड़े–बड़े राजा अपने महल तक न्यौछावर कर देते हैं। मैं उसी खंडहर हुए प्रेम को मन में बसाए हुए घूमता रहता हूँ।

dyk LkkUn;& 1. कहाँ का नाता में प्रश्न अलंकार। 2. और की आवृत्ति में यमक अलंकार। 3. कहाँ का और जग जिस धरती पर अनुप्रास अलंकार। 4. खड़ी बोली और श्रंगार रस।

5 e jk;k--fy, fQjrk gA

vFk–कवि कहते है कि जिन्हें तुम मेरे गाने कहते हो वह वास्तव में मेरे हृदय की पीड़ा हैं। जब मैं दुखों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता हूँ तो तुम नए क्षण की संज्ञा देते हों वास्तव में मैं कवि नहीं अपितु दीवाना हूँ जो प्रेम में डूबा हुआ है।

मैं संसार में दीवाने की तरह ही घूमता रहता हूँ जहाँ भी जाता हूँ वहाँ अपनी दीवानगी से वातावरण को मस्त बना देता हूँ। मैं प्रेम और सुन्दरता का गीत गाता हूँ। मेरे गीतों में ऐसा सुर है कि जिसे सुनकर लोग झूम उठते है। प्रेम में झुक जाते है और आनंद में लहराने लगते है।मैं सबको इसी प्रेम की मस्ती का संदेश देने के लिए संसार में घूमता रहता हूँ।

dyk LkkUn;& तदभव शब्दों की अधिकता का प्रयोग। 2. खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। 3.श्रंगार रस की अभिव्यक्ति। 4. कवि कहकर और झूम उठे में अनुप्रास अलंकार।

6- gk tk, --fnu tYnh tYnh <yrk gA

vFk&कवि जीवन की व्याख्या करते हुए कहते है कि दिन भर चल कर अपनी मंजिल पर पहुँचने वाला यात्री देखता है कि अब मंजिल आने वाली है कहीं रास्तें में रात न हो जाए इस कारण वो थकान होने के बावजूद भी जल्दी जल्दी चलता हैं लक्ष्य प्राप्ति के लिए उसे दिन जल्दी ढलता हुआ प्रतीत हो रहा है।

dyk LkkUn;& & [kMh ckyh dk i;kxAfo;kx Jxkj jl A

7 cPp ---fnu tYnh tYnh <yrk gA

vFk&कवि प्रकृति के माध्यम से उदाहरण देते हुए कहते है कि एक चिड़िया जब आका । में उड़ कर अपने घोंसले की ओर लौट रही है तो उसके मन मे सवाल आता है कि मेरे बच्चे मेरी राह देख रहे होगें। वे घौंसले में बैठे ताक रहे होगें उन्हें मेरी प्रतीक्षा होगी यह ध्यान आते ही उसके पंखों में तेजी आ जाती है और वो दिन ढलने के पहले जल्दी जल्दी अपने घरों में पहुँच जाना चाहती है।

8- e>l feyu-------------------------------------fnu tYnh tYnh <yrk gA

vFk&कवि कहते है कि इस दुनिया में मेरा कोई अपना नहीं है जो मुझसे मिलने के लिए व्याकुल हो। फिर मेरा चित्त किसके लिए चंचल हो। मेरे मन में किसके प्रति प्रेम तरंग जागे।ये प्रश्न मेंरे कदमों को शिथिल कर देते है उसके हृदय में यह व्याकुलता भर जाती है कि दिन ढलने ही रात हो जाएगी अर्थात् रात में एकाकी पन और निराशा उसे अ ांत कर देगी।

egRoi.k iz'u :–

1 आत्मपरिचय कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

2. शीतल वाणी में आग होने का क्या अभिप्राय है?

3. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ो से झाँक रहे है ?

4. दिन–दिन जल्दी–जल्दी ढलता है से कवि का क्या आशय है ?

5. बच्चन के गीत के आधार पर उन स्थितियों को स्पष्ट कीजिए जिनके कारण पथिक जल्दी चलता है ?

1- irx

1- lcl --nfu;k

vFk& कवि कहते है कि भादों का महीना बीत गया है। इस महीने में बहुत तेज बारिश हुई अब शरद ऋतु आ गई है,जिसके उजाले से अँधेरा मिट गया हैं। सवेरा खरगोश की आँखों के जैसा लाल–भूरा है। भारद का उज्जवल मास की चमक और उमंग को देखकर ऐसा लग रहा है कि कोई उत्साही बालक कई पुलों को पार करके अपनी चमकीली साइकिल को तेजी से चलाते हुए जोर–जोर से घटियाँ बजाते हुए तथा पतंग उड़ाने वाले बच्चों को चमकीले इशारों से बलाते हुए आ गया है। ऐसा लगता है कि मानो शरद ऋतु रूपी बालक से आकाश को बहुत कोमल साफ और मुलायम बना दिया है जिससे कि आकाश में पतंग उड़ सके। पतंग दुनिया की सबसे पतली और हल्की रंगीन चीज़ है। उसमें लगी बाँस की कमानी भी बहुत पतली होती है। जब पतले कागज और कमानी से बनी पतंग आकाश में उड़ती है तो बच्चें खुशी के मारे सीटियाँ बजाने लगते है तथा किलकारियाँ मारने लगते है। पतंगों से भरा आकाश ऐसा प्रतीत होता है मानो यहाँ रंगबिरंगी तितलियों की कोई चलती –फिरती दुनियाँ है।

dyk Lkkn;& 1.खरगोश की आँखो में उपमा अलंकार। 2. प्रातकालीन ताज़गी का वर्णन किया गया है। 3 शरद ऋतु के आगमन का वर्णन है। 4. अलंकारों और बिम्बों का प्रयोग अधिकता से प्रयोग है।5.प्रकृति के साथ मानवीकरण किया है।

2- tUe ls gh--/kkxs ds lgkjs

vFk&कवि कहते हैं कि ऐसा लगता है कि बच्चे जन्म के साथ ही शरीर में कपास ले आते है। उनके पैरों में एक बैचनी होती है जिसके कारण वे सारी दुनिया को नाप डालना चाहते है। लगता है कि सारी धरती पर घूम आना चाहते है। जब वे दौड़ते है तो उन्हें मस्ती में धुप,गरमी,कठोर छत,दीवारों आदि का बोध नहीं होता है। वे कठोर छतों पर इस प्रकार दौड़ते है कि मानों वह बहुत नरम हो। उनके नरम पैरों से छते भी नरम हो जाती है। उनकी संगीतमय पदचाप के कारण सारी दिशाओं में मृंदग जैसा संगीत गुंजने लगता है। प्रायः जब बच्चे पतंग उड़ाते हुए छतों के खतरनाक किनारों में पहुँच जाते है तो ऐसी गतिविधी करते है जिसे देखकर ऐसा लगता है कि मानो पेड़ की लचीली डालो से लटकर झूल रहे हो। इतना खतरा उठाते हुए भी वे बचते है तो अपने रोमांचित भारीर की मस्तलय के कारण बचते है। उनके द्वारा उड़ाई गई पतंगे बहुत ऊँचाई तक पहुँच जाती है। तब ऐसा लगता है कि पतंगे अपनी डोर के सहारे इन जोशिले बच्चों को रोके रखती है।

dyk Lkkn;& पतंगो की धड़कती ऊँचाइयों में,धड़कती में विशेषण का प्रयोग। 2.उपमा अलंकार। 3. बिम्बों का प्रयोग किया गया है उदाहरण पृथ्वी घुमती हुई आती है ।4मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग।

3- irxks ds lkFk-------------------------------ijks ds ikl

vFk&पतंग उड़ाने वाले बच्चें मानो पतंग के साथ–साथ खुद भी उड़ रहे है। वे अपने शरीर के रोये से निकलने वाले संगीत के सहारे उड़ रहे हैं। यदि कभी–कभार वे छतों के खतरनाक किनारों से नीचे गिर जाते है तो बच जाते है और पहले से भी अधिक निर्भय हो जाते है तब वे अत्याधिक उत्साह के कारण सुनहर सूरज के समान दमकने लगते है। इन बच्चों को देखकर ऐसा लगता है कि यह बच्चे अपने पैरो से सारी पृथ्वी को नाप लेना चाहते है अर्थात् चारों तरफ घुमना फिरना चाहते है।उनका उत्साह कई गुना हो जाता है।

dyk Lkkn;&

egRoi.k i'u :–

1. सबसे तेज बौछारें गयी,भादों गया के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है उसका वर्णन अपने शब्दों में करें। अथवा पतंग कविता का मूल भाव लिखिए।
2. जन्म से ही वे अपने साथ लाते है कपास – कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है।
3. पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे है– बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध है ?